REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2024

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्मित नवीं के गणित विषय की पाठ्यपुस्तक का शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर मूल्यांकन

डॉ. नीरज जोशी[1] , राधेश्याम परमार[2]
[1]सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, हेमावती नन्दन बहुगुणा, गढ़वाल विश्वविद्यालय, (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), स्वामी रामतीर्थ परिसर, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड.
[2]माध्यमिक शिक्षक, शासकीय कन्या शिक्षा परिसर इंदौर.

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य था – राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा कक्षा नवीं हेतु निर्मित गणित विषय की पाठ्यपुस्तक के विभिन्न पक्षों पर शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर मूल्यांकन करना। शोध कार्य में न्यादर्श आकार 28 था । प्रदत्त संकलन हेतु उपकरण के रुप में शोधकर्ता द्वारा विकसित पाँच बिन्दू प्रतिक्रिया मापनी का उपयोग किया गया। प्रतिक्रिया मापनी में कुल 29 कथन दिये गये थे जो पाठ्यपुस्तक के भौतिक और विषयवस्तु पक्ष पर आधारित थे। प्रदत्तों का विश्लेषण आवृत्ति एवं प्रतिशत विश्लेषण के आधार पर किया गया। शोध के परिणाम थे – पाठ्यपुस्तक की भाषा सरल पाई गयी। पाठ्यपुस्तक में विषय वस्तु को एक विषय से दूसरे विषय के साथ सम्बद्ध पाया गया। पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों को कल्पनाशील गतिविधियों की मदद से सीखने में सहायक पाई गई।

प्रस्तावना

पुस्तक को सूचनाओं एवं विचारों के भण्डार, विचार और संप्रेषण का सामान्य माध्यम माना गया है। अध्यापकों एवं विद्यालयों के लिये पुस्तकें शिक्षित करने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्त्रोत है। शैक्षिक विकास एवं पाठ्यचर्या विकास में पाठ्यपुस्तक चयन एवं लेखन शामिल रहता है। पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के लिये प्रेरणा का कार्य करती है। पाठ्यपुस्तकें विद्यार्थियों को एक निश्चित तथा स्पष्ट उद्देश्य बताती है। उन्हें कक्षा के निर्धारित पाठ्यक्रम का ज्ञान देती है तथा उन्हें यह भी बताती है कि उसने कितना कार्य समाप्त कर लिया है तथा कितना शेष रह गया है। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा यह सुझाव दिया गया था कि समस्त विद्यार्थियों को समान गुणवत्ता वाली शिक्षा मिलनी चाहिए जबकि वे किसी भी जाति, लिंग, संप्रदाय या स्थान के हों। इसी प्रकार यशपाल समिति (शिक्षा बिना बोझ के, 1993) द्वारा यह सुझाव दिया गया था कि पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तक बनाने की प्रक्रिया का विकेंद्रीकरण हो जिससे शिक्षण में शिक्षकों की प्रतिभागिता बढ़े। विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों एवं शिक्षकों को अधिक स्वायत्ता मिले ताकि वे स्थानीय परिवेश को ध्यान में रखते हुए नवाचार कर सके। शैक्षणिक सत्र 2017–18 से मध्यप्रदेश की माध्यमिक स्तर की शासकीय शालाओं में मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक समिति द्वारा निर्मित पाठ्यपुस्तकों के स्थान पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन. सी.ई.आर.टी.) द्वारा निर्मित पाठ्यपुस्तकों को लागू किया गया। उपरोक्त पाठ्यपुस्तकें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) पर आधारित है, जिसकी मान्यता है कि कक्षा में ज्ञान का निर्माण स्वयं विद्यार्थी द्वारा किया जाता है, जबकि शिक्षक की भूमिका अनुभवदाता की होती है। पाठ्यपुस्तक में परिवर्तन करने से कक्षा में विद्यार्थी

और शिक्षक की भूमिका में होने वाला परिवर्तन भी परिलक्षित होना चाहिए। उपरोक्त तथ्य को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा कक्षा नवीं के गणित विषय की राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्मित पाठ्यपुस्तक का शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर मूल्यांकन से संबंधित शोध कार्य किया गया।

औचित्य शिक्षा मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षा के माध्यम से इस तरह के परिवर्तन लाने का प्रयास किया जाता है ताकि विद्यार्थी समाज में समायोजित हो सके। इन गतिविधियों को प्राप्त करने में पाठ्यपुस्तक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इसलिये यह भी महत्वपूर्ण है कि पाठ्यपुस्तक गुणवत्तापूर्ण है अथवा नहीं, इसका ज्ञान पुस्तक के मूल्यांकन द्वारा प्राप्त हो सकता है। पाठ्यपुस्तक मूल्यांकन द्वारा यह ज्ञात हो सकता है कि पाठ्यपुस्तक किन–किन उद्देश्यों की पूर्ति कर रही है तथा कौनसे उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हो पा रही है अथवा आंशिक रूप से हो रही है। अच्छी पाठ्यपुस्तक के कौन से गुण पाठ्यपुस्तक में है तथा कौन से लाये जाने है। पुस्तक लेखक को पुस्तक मूल्यांकन से प्रतिपोष प्राप्त होता है, जिससे पुस्तक निरंतर सवंर्धित होती है। अतः पाठ्पुस्तकों में भी निरंतर परिवर्तन होना चाहिये। इसे अद्यतन बनाए रखने के लिए मूल्यांकन आवश्यक है। मूलतः इनका मूल्यांकन इसके उपभोक्ताओं यथा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा किया जाना चाहिये।

पाठ्यपुस्तक विश्लेषण के क्षेत्र में पिपरइया (1989), अम्बारसु (1992), भारत (1994) और सोनी (2006) तथा पाठ्यपुस्तक मूल्यांकन के क्षेत्र में डोके (1994), पाटीदार (1994), मोहन्ती (1997), तावड़े (2006), वर्मा (2012) और कुमार (2014) द्वारा शोध कार्य किए गए। उपरोक्त शोध कार्यों में सामाजिक अध्ययन, अंग्रेजी तथा विज्ञान विषय की पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण/ मूल्यांकन किया गया। शैक्षणिक सत्र 2017–18 से मध्यप्रदेश की माध्यमिक स्तर की शासकीय शालाओं में मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक समिति द्वारा निर्मित पाठ्यपुस्तकों के स्थान पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) द्वारा निर्मित पाठ्यपुस्तकों को लागू किया गया। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्मित कक्षा नवीं की गणित पाठ्यपुस्तक के मूल्यांकन पर कोई शोध कार्य नहीं किया गया। इसलिए शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत समस्या पर शोध किया गया। शोधकर्ता ज्ञात करना चाहता था कि पाठ्यपुस्तक परिवर्तन के प्रति क्या विद्यार्थी एवं शिक्षक पूर्व से मानसिक रूप से तैयार थे ? क्या शिक्षकों को नवीन पाठ्यपुस्तकों को लागू करने से पूर्व शिक्षण का उपयुक्त प्रशिक्षण दिया गया था ? प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत शिक्षकों द्वारा कक्षा शिक्षण में उपयोग करने में तथा अनुसरण गतिविधि के रूप में पठन–पाठन की प्रक्रिया में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को किन–किन बिन्दुओं पर कठिनाई महसूस हो रही थी ? एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकों से विद्यार्थियों को क्या लाभ होगा ? वर्तमान पाठ्यपुस्तक पूर्व मे प्रचलित पाठ्यपुस्तक की तुलना में ज्यादा कठिन तो नही है ?

समस्या कथन

"राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्मित नवीं के गणित विषय की पाठ्यपुस्तक का शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर मूल्यांकन"

प्रयुक्त पदों की संक्रियात्मक परिभाषा

पाठ्यपुस्तक – पाठ्यपुस्तक शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का साधन है जिसकी सहायता से शिक्षक द्वारा अधिगम उद्देश्यों के आधार पर विद्यार्थियों को अधिगम अनुभव प्रदान किए जाते हैं।

मूल्यांकन – मूल्यांकन शब्द से आशय पाठ्यपुस्तक की भौतिक व शैक्षणिक विशेषताओं के आधार पर मूल्यांकन से है।

शोध उद्देश्य

1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा कक्षा नवीं हेतु निर्मित गणित विषय की पाठ्यपुस्तक के विभिन्न पक्षों पर शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर मूल्यांकन करना।

परिसीमन

1. शोध अध्ययन को इन्दौर शहर में स्थित शासकीय विद्यालयों के नवीं कक्षा के गणित विषय के शिक्षकों तक सीमित रखा गया।

2. शोध अध्ययन को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्मित हिन्दी माध्यम की पाठ्यपुस्तक तक सीमित रखा गया।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध हेतु उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि का उपयोग किया गया। न्यादर्श आकार 28 था जिसका वर्णन इस प्रकार है –

सारणी 1: उम्र समूह, लिंग, शिक्षण अनुभव और अकादमिक योग्यता के आधार पर न्यादर्श

पद	विद्यालयों की संख्या	उम्र समूह	लिंग		शिक्षण अनुभव	अकादमिक योग्यता
			पुरूष	महिला		
व्याख्याता / प्रधान पाठक / उ.श्रे.शि. / वरिष्ठ अध्यापक / अध्यापक / अति.शिक्षक	18	26 से 56 वर्ष	14	14	01 से 33 वर्ष	बी.एस–सी. / एम. एस–सी. / एम.फिल. / एम.ए. / बी.एड. / एम. एड.

उपरोक्त शिक्षक– शिक्षिकाएं इन्दौर के विभिन्न विद्यालयों यथा शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय संयोगितागंज, शासकीय सुभाष उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बड़ागणपति, शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्नेहलतागंज क्र. 1, शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बिजलपुर इन्दौर, शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बिजलपुर, शासकीय शारदा कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय , शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तिलक नगर , शासकीय उत्कृष्ट बाल विनय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शासकीय स्वामी विवेकानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नेहरू नगर, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय विनोबा नगर, शासकीय मालव कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मोतीतबेला इन्दौर, शासकीय हाई स्कूल पगनिसपागा, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मूसाखेड़ी, शासकीय बहुउद्देशीय मल्हार आश्रम, शासकीय नूतन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चितावद में कार्यरत थे। ये विभिन्न पदों पर कार्यरत विभिन्न शैक्षणिक योग्यता और अनुभव वाले शिक्षक–शिक्षिकाएं थे।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु उपकरण के रुप में शोधकर्ता द्वारा विकसित पाँच बिन्दू प्रतिक्रिया मापनी का उपयोग किया गया। प्रतिक्रिया मापनी में कुल 29 कथन दिये गये थे जो पाठ्यपुस्तक के भौतिक और विषयवस्तु पक्ष पर आधारित थे। भौतिक पक्ष के अंतर्गत पुस्तक कव्हर, जिल्द, अक्षरों का आकार, पृष्ठों का रंग और आकार तथा विषयवस्तु पक्ष के अंतर्गत कठिनाई का स्तर, चित्र, भाषा, स्व–अधिगम, विषयवस्तु का दूसरे विषय से सहसंबंध, अंतर्क्रिया पर आधारित कथनों को सम्मिलित किया गया। ये कथन सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रकृति के थे। प्रत्येक कथन के समक्ष पाँच विकल्प दिये गये थे जिसमे पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, पूर्णतः असहमत के विकल्प थे। प्रयोज्य को उपरोक्त पाँच विकल्पों में से किसी एक विकल्प का चयन कर सही का चिन्ह लगाना था।

प्रदत्त संकलन

प्रदत्तों के संकलन हेतु सर्वप्रथम शासकीय विद्यालयों में जाकर प्राचार्य महोदय से अनुमति प्राप्त की गई। फिर वहां कक्षा नवीं को गणित विषय पढ़ाने वाले शिक्षक–शिक्षकाओं से सम्पर्क कर पाठ्यपुस्तक मूल्यांकन व प्रतिक्रिया मापनी के संबंध में आवश्यक जानकारी प्रदान की गई। उन्हें कथनों को ध्यान पूर्वक पढ़कर उनके सामने दिये गये विकल्पों में से उपयुक्त विकल्प का चयन कर संबंधित विकल्प के समक्ष सही का निशान लगाने

को कहा गया। प्रतिक्रिया मापनी हेतु समय सीमा नहीं रखी गयी। प्रतिक्रया मापनी को पूर्ण रूप से हल करने के पश्चात प्रतिक्रिया मापनी प्राप्त कर ली गई।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रदत्तों का विश्लेषण आवृत्ति एवं प्रतिशत विश्लेषण के आधार पर किया गया। जिसका कथनवार विश्लेषण इस प्रकार है –

सारणी क्रमांक 2 : प्रतिक्रिया मापनी हेतु कथनवार आवृत्ति एवं प्रतिशत

क्र.	कथन	आवृत्ति / प्रतिशत	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत
1	पाठ्यपुस्तक की भाषा सरल है।	आवृत्ति	7	19	0	2	0
		प्रतिशत	25.00	67.86	0.00	7.14	0.00
2	पाठ्यपुस्तक में अक्षरों का आकार पठनीय है।	आवृत्ति	10	16	0	2	0
		प्रतिशत	35.71	57.14	0.00	7.14	0.00
3	पाठ्यपुस्तक में पर्याप्त चित्र नहीं दिये गये हैं।	आवृत्ति	1	8	2	16	1
		प्रतिशत	3.57	28.57	7.14	57.14	3.57
4	पाठ्यपुस्तक का उपयोग कर विद्यार्थी स्वयं आसानी से सीख सकते हैं।	आवृत्ति	0	11	5	10	2
		प्रतिशत	0.00	39.29	17.86	35.71	7.14
5	पाठ्यपुस्तक की विषय सामग्री को तर्कपूर्ण ढंग से सुसंगठित नही किया गया है।	आवृत्ति	4	5	2	15	2
		प्रतिशत	14.29	17.86	7.14	53.57	7.14
6	पाठ्य पुस्तक में गृहकार्य संबंधी सुझाव नहीं दिए गए हैं।	आवृत्ति	1	10	3	14	0
		प्रतिशत	3.57	35.71	10.71	50.00	0.00
7	पाठ्यपुस्तक के कव्हर को आकर्षक बनाया गया है।	आवृत्ति	3	15	5	4	1
		प्रतिशत	10.71	53.57	17.86	14.29	3.57
8	पाठ्यपुस्तक की जिल्द मजबूत नहीं हैं।	आवृत्ति	5	7	4	12	0
		प्रतिशत	17.86	25.00	14.29	42.86	0.00
9	पाठ्यपुस्तक कक्षा नवीं के विद्यार्थियों के स्तर से जटिल है।	आवृत्ति	5	11	3	8	1
		प्रतिशत	17.86	39.29	10.71	28.57	3.57
10	पाठ्यपुस्तक की भाषा में वर्तनी संबंधी त्रुटियां है।	आवृत्ति	2	5	2	17	2
		प्रतिशत	7.14	17.86	7.14	60.71	7.14
11	पाठ्यपुस्तक में प्रत्येक इकाई में समुचित गतिविधि आधारित प्रश्न दिये गये हैं।	आवृत्ति	4	19	1	3	1
		प्रतिशत	14.29	67.86	3.57	10.71	3.57

12	पाठ्यपुस्तक में विशेष कथनों पर ध्यानाकर्षण के लिए रंगीन मुद्रण किया गया है।	आवृत्ति	3	11	4	10	0
		प्रतिशत	10.71	39.29	14.29	35.71	0.00
13	पाठ्यपुस्तक में विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण क्रमबद्ध रूप से किया गया है।	आवृत्ति	5	20	2	1	0
		प्रतिशत	17.86	71.43	7.14	3.57	0.00
14	पाठ्यपुस्तक में विषय वस्तु को एक विषय से दूसरे विषय के साथ सम्बद्ध किया गया है।	आवृत्ति	7	12	4	5	0
		प्रतिशत	25.00	42.86	14.29	17.86	0.00
15	पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों को कल्पनाशील गतिविधियों की मदद से सीखने मे सहायक है।	आवृत्ति	6	14	1	6	1
		प्रतिशत	21.43	50.00	3.57	21.43	3.57
16	पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों को अनुभव पर विचार करने का अवसर दे रही है।	आवृत्ति	4	15	4	5	0
		प्रतिशत	14.29	53.57	14.29	17.86	0.00
17	पाठ्यपुस्तक में विद्यार्थी सूचना सामग्री से जुड़कर नये ज्ञान का सृजन कर पा रहे हैं।	आवृत्ति	6	15	4	2	1
		प्रतिशत	21.43	53.57	14.29	7.14	3.57
18	पाठ्यपुस्तक में विषय वस्तु दैनिक जीवन के अनुभव के अनुसार है।	आवृत्ति	6	16	3	3	0
		प्रतिशत	21.43	57.14	10.71	10.71	0.00
19	पाठ्यपुस्तक विद्यालय में विद्यार्थियों के मानसिक दबाव को कम कर रही है।	आवृत्ति	1	7	6	13	1
		प्रतिशत	3.57	25.00	21.43	46.43	3.57
20	पाठ्यपुस्तक छोटे समूहों में बातचीत को प्राथमिकता दे रही है।	आवृत्ति	3	14	5	6	0
		प्रतिशत	10.71	50.00	17.86	21.43	0.00
21	पाठ्यपुस्तक हाथों से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता दे रही है।	आवृत्ति	4	14	2	6	2
		प्रतिशत	14.29	50.00	7.14	21.43	7.14
22	पाठ्यपुस्तक में प्रत्येक अध्याय के अन्त में समुचित सारांश दिया गया है।	आवृत्ति	8	15	1	2	0
		प्रतिशत	28.57	53.57	3.57	7.14	0.00
23	पाठ्यक्रम कम किया जाना चाहिए।	आवृत्ति	5	12	1	8	2
		प्रतिशत	17.86	42.86	3.57	28.57	7.14
24	पाठ्यपुस्तक में विद्यार्थियों के लिए स्व–अधिगम हेतु स्पष्ट निर्देश नहीं दिए गये हैं।	आवृत्ति	3	7	2	16	0
		प्रतिशत	10.71	25.00	7.14	57.14	0.00

25	पाठ्य पुस्तक में शिक्षकों हेतु निश्चित निर्देश नहीं दिए गये हैं।	आवृत्ति	1	4	1	19	3
		प्रतिशत	3.57	14.29	3.57	67.86	10.71
26	पाठ्यपुस्तक लागु करने से पूर्व शिक्षकों को पर्याप्त प्रशिक्षण नहीं दिया गया।	आवृत्ति	5	4	2	13	4
		प्रतिशत	17.86	14.29	7.14	46.43	14.29
27	पाठ्यपुस्तक के अध्याय परस्पर संबंधित है।	आवृत्ति	3	21	1	3	0
		प्रतिशत	10.71	75.00	3.57	10.71	0.00
28	पाठ्यपुस्तक के अध्यापन के लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता है।	आवृत्ति	3	10	1	12	2
		प्रतिशत	10.71	35.71	3.57	42.86	7.14
29	पाठ्यपुस्तक की सहायता से शिक्षकों द्वारा विषय वस्तु समझाने में आसानी हो रही है।	आवृत्ति	1	18	2	6	1
		प्रतिशत	3.57	64.29	7.14	21.43	3.57

परिणाम

1. पाठ्यपुस्तक की भाषा सरल पाई गयी।
2. पाठ्यपुस्तक में अक्षरों का आकार पठनीय है।
3. पाठ्यपुस्तक में पर्याप्त चित्र पाये गये।
4. पाठ्यपुस्तक का उपयोग कर विद्यार्थी स्वयं आसानी से सीखने में समर्थ पाये गये।
5. पाठ्यपुस्तक की विषय सामग्री तर्कपूर्ण ढ़ंग से सुसंगठित पाई गई।
6. पाठ्यपुस्तक में गृहकार्य सम्बन्धित सुझाव पाये गये।
7. पाठ्यपुस्तक का कव्हर आकर्षक पाया गया।
8. पाठ्यपुस्तक की जिल्द मजबुत नही पाई गई।
9. पाठ्यपुस्तक कक्षा नवीं के विद्यार्थियों के स्तर से जटील पाई गई।
10. पाठ्यपुस्तक की भाषा में वर्तनी सम्बन्धि त्रुटी नहीं पाई गई।
11. पाठ्यपुस्तक में प्रत्येक इकाई में समुचित गतिविधि आधारित प्रश्न दिये गये।
12. पाठ्यपुस्तक में विशेष कथनों पर ध्यानाकर्षण के लिये रंगीन मुद्रण पाया गया।
13. पाठ्यपुस्तक में विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण क्रमबद्धरूप से पाया गया।
14. पाठ्यपुस्तक में विषय वस्तु को एक विषय से दूसरे विषय के साथ सम्बद्ध पाया गया।
15. पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों को कल्पनाशील गतिविधियों की मदद से सीखने में सहायक पाई गई।
16. पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों को अनुभव पर विचार करने का अवसर देते पाई गई।
17. पाठ्यपुस्तक में विद्यार्थी सूचना सामग्री से जुड़कर नये ज्ञान का सृजन करते पाये गए।
18. पाठ्यपुस्तक में विषय वस्तु दैनिक जीवन के अनुभव के अनुसार पाई गई।
19. पाठ्यपुस्तक छोटे समूहों में बातचीत को प्राथमिकता देने मे समर्थ है।
20. पाठ्यपुस्तक हाथों से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देते पाई गई।
21. पाठ्यपुस्तक में प्रत्येक अध्याय के अन्त में समुचित सारांश पाया गया।
22. पाठ्यक्रम कम किया जाना चाहिये।

संदर्भ ग्रंथ

1. **केकरे (1979)** *साहित्य व पाठ्यपुस्तकों में प्रस्तुत विषयवस्तुओं का तुलनात्मक अध्ययन.* अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
2. **सिंह (1979)** *इंदौर विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम हेतु पाठ्यसामग्री का मूल्याकंन.* अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
3. **शर्मा (1985)** *प्राथमिक स्तर विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं भाषा पाठ्यपुस्तकों में उपयोग की गई भाषा की व्यापकता का अध्ययन.* अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
4. **पोक्शे (1972)** *कक्षा चौथी की इतिहास की पाठ्यपुस्तक का आलोचनात्क मूल्यांकन.* अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
5. **पिपरइया (1989)** *भाषा व सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं की स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन.* अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
6. **अम्बारसु (1992)** *मूल्योन्नमुखता का अध्ययन प्राथमिक स्तर की अंग्रेजी भाषा की पाठ्यपुस्तक* अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
7. **राव (1993)** *राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा अनुशंसित उच्च माध्यमिक विद्यालयों में भौतिकशास्त्र की पाठ्यपुस्तक का मूल्यांकन.* अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
8. **भारत (1994)** *कक्षा आठवीं की दो विभिन्न पाठ्यपुस्तकों में वर्णित सामाजिक पूर्वाग्रहों का पाठयक्रम विकास हेतु विश्लेषण व मूल्यांकन.* अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
9. **डोके (1994)** *एम एड स्तर पर शैक्षिक प्रशासन के पाठ्य विवरणों का मूल्यांकन एवं वैकल्पिक पाठ्य विवरण प्रतिमानों का निर्माण.* अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
10. **पाटीदार (1994)** *कक्षा 8वीं की दो विभिन्न पाठ्यपुस्तकों में वर्णित सामाजिक पूर्वाग्रहों का पाठ्यक्रम विकास हेतु विश्लेषण व मूल्यांकन.* अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
11. **मोहन्ती (1997)** *कक्षा 10वीं की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों का भौतिक व शैक्षणिक विशेषताओं के आधार पर मूल्यांकन.* अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
12. **सत्यार्थी (2003)** प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण के शिक्षक कार्यक्रमों का शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों द्वारा मूल्यांकन. अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
13. **तावड़े, एम. (2006)** *राज्य संसाधन केन्द्र मध्यप्रदेश द्वारा प्रकाशित साक्षरता की पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन.* अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
14. **सोनी, एम.(2006)** *पर्यावरण शिक्षण हेतु मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा निर्धारित पुस्तकों का समीक्षात्मक अध्ययन.* अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
15. **अस्के, एस. (2007)** *मध्यप्रदेश पाठय पुस्तक निगम द्वारा निर्धारित हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में मूल्योन्मुखता का अध्ययन.* अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
16. **कोरी (2008)** *मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम द्वरा निर्धारित इतिहास की पाठ्यपुस्तक का मूल्यांकन.* अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
17. **वर्मा, एन. (2012)** *''मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा अनुशंसित कक्षा 9 वीं की विज्ञान विषय की पाठ्यपुस्तक का शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर मूल्यांकन.* अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
18. **कुमार, एस. (2013)** *मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक समिति द्वारा निर्मित कक्षा 9 वीं की हिन्दी विषय की पाठ्यपुस्तक का विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर मूल्यांकन.* अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
19. **राव (1993)** *राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा अनुशंसित उच्च माध्यमिक विद्यालयों में भौतिकशास्त्र की पाठ्यपुस्तक का मूल्यांकन.* अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
20. **एम.एच.आर.डी. 1993**. *शिक्षा बिना बोझ के,नयी दिल्ली इंटरनेशनल ज्यॉग्राफ़िकल यूनियन. 1992. इंटरनेशनल चार्टर ऑन ज्यॉग्राफ़िकल एजुकेशन*